International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

विशेष शिक्षा और कला

डा. रेशमा ज़ैदी

असिसटेंट प्रोफेसर (चित्रकला), नायाब अब्बासी पी. जी. कॉलिज, अमरोहा–244221

भारत एक विशाल देश है, इसके समस्त तरह–तरह की महत्वपूर्ण समस्याएँ हैं। इनमें प्रायः शिक्षा बेरोजगारी की समस्या है। उन्ही में से मंद–बुद्धि बच्चों और उनकी शिक्षा की समस्या है। इस क्षेत्र में विचार और कार्य करने की अति आवश्यकता है।

मंद–बुद्धि बालक वे बच्चे जिनके व्यक्तित्व–विकास के एक या अधिक क्षेत्रों में विकार होना जैसे बोलने, सोचने, पढ़ने, लिखने, गिनती करने इत्यादि अनेक क्रियाएँ। इसमें ऑटिज़्म एक महत्वपूर्ण कारक है, एक ऐसी मानसिक स्थिति जिसके अर्न्तगत ये बच्चे दूसरे लोगों के साथ बात–चीत करने में बहुत कठिनाई का अनुभव करते हैं। इनका मस्तिष्क दूसरे लोगों से अलग तरीके से कार्य करता है। यह बिमारी जन्मजात होती है, ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसआर्डर एक दिमागी बिमारी है। जिसमें अन्य लोगों के साथ संवाद करने और सम्बन्ध स्थापित करने इत्यादि में कठिनाई होती है। इस कारण इसे ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम विकार कहा जाता है। इस श्रेणी के बालक अन्य सामान्य स्तर के बालकों की तरह रचनात्मक खेल या अन्य क्रियाएँ नही करते, बल्कि एक ही कार्य को बार–बार करने वाली क्रियाओं में रूचि लेते हैं। इस प्रकार के बालकों की समस्याओं, शिक्षा पर अधिक ध्यान एवं विचार–विमर्श की आवश्यकता है।

आज भारत की जनगणना 2016 के अनुसार (कोविड 19 की वजह से 2021 में जनगणना नहीं हुई) जनसंख्या 121 करोड़ है, जिसमें से 2.68 करोड़ लोग इस श्रेणी में आते हैं। अर्थात् 2.21% लोग शारीरिक एवं मानसिक रूप से पीड़ित हैं, इनकी देखभाल और शिक्षा के लिए जो भी कार्य किए जा रहे हैं, एन0जी0ओ0 की सहायता से उसका लाभ 50% लोगों को भी नही पहुँच पाता है। अतः इस ओर ध्यान देना अति आवश्यक है।

विशेष स्कूल शिक्षा की शुरूआत – इसकी शुरूआत सबसे पहले जीन मार्क इटार्ड (Jean Mark Itard) ने की थी। यह एक French Physician थे, जिन्होने 5 साल तक एक मंद–बुद्धि बालक जिसका नाम विक्टर था, 1801 में उसे प्रशिक्षण देते रहे और धीरे–धीरे जो उस बालक में विकास होता रहा उसका अध्ययन किया। इस प्रकार एक मंद–बुद्धि बालक पर अध्ययन शुरू हुआ।

19वीं शताब्दी – यह वह समय था जब पहली बार अमरीका और फ्रांस में विकलांग और मंद–बुद्धि बच्चों के लिए कई स्कूल खोले गए थे, इसका श्रेय फ्रांस के Edward O Seguin को जाता है, जो जीन मार्क इटार्ड के शिष्य थे। इन्होने विकलांग बच्चों के लिए पहला Day Boarding School खोला जहाँ इन बच्चों को सिखाया और पढ़ाया जाता था, और इन्हे सफलता तब मिली जब इन्होंने मंद–बुद्धि बच्चों को कुछ प्रशिक्षण द्वारा, सामान्य बच्चों की भाँति शिक्षा दे पाए। यू0एस0ए0 में भी 1834 में न्यूयार्क में मंद–बुद्धि बच्चों के लिए स्कूल खोला गया और इस प्रकार बाद में अलग–अलग स्थानों पर कई और स्कूल खोले गए।

भारत में विशेष–शिक्षा का पहला स्कूल

चिल्ड्रन एण्ड सोसायटी के अनुसार मुबंई में स्थित NGO, भारत में मंद–बुद्धि बच्चों के लिए पहला आवास संस्थान शुरू किया गया जो Umbrella Organization Children Aid Society के अधीन कार्य करता है। आज भारत में भी अलग–अलग राज्यों में ऐसे कई स्कूल हैं, जहाँ इन बच्चों को प्रशिक्षण देकर उन्हें पढ़ाया जाता है। **इन स्कूलों में दी जाने वाली शिक्षा में ध्यान रखने वाले आवश्यक बिन्दु इस प्रकार है।**

1. सामान्यतः ऐसा पाया जाता है कि इन बच्चों में एक–दूसरे के साथ सम्पर्क बनाने में ये कठिनाई महसूस करते हैं। समाज में सबसे मिलने–जुलने में संकोच करते हैं, इसलिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे इनका उचित ध्यान रखें, इन्हे भी समाज का अंग समझते हुए इन्हें विशेष स्थान दें।
2. **अनुकूल पर्यावरण** – इन बच्चों को स्कूल में अनुकूल पर्यावरण में बड़े प्रेम–पूर्वक और सहनशीलता के साथ इन्हें पढ़ाना और सिखाना चाहिये। नई–नई शिक्षण प्रणालियों के माध्यम से इनमें आत्म–विश्वास लाने की अच्छी कोशिश है। यदि इन बच्चों को अनुकूल वातावरण में एक अच्छा प्रशिक्षित शिक्षक इन्हें पढ़ाता और सिखाता है, ऐसी स्थिति में बच्चों में सकारात्मक प्रभाव देखा जा सकता है।
3. **प्रशंसा** – इन बच्चों के द्वारा किये गए कार्य की प्रशंसा करना बहुत आवश्यक है, क्योकि इन बच्चों के आत्म–विश्वास में कमी होती है और ये किसी भी कार्य को पूरा करने में ये बच्चे अधिक समय लेते हैं, इसलिए शिक्षक को चाहिये कि इनके कार्य की प्रशंसा करें जिससे ये बच्चे जब भी कोई कार्य करें तो उसमें पूरी निष्ठा और रूचि दिखायें।

4. **दोहराने की प्रक्रिया –** इनके लिखने–पढ़ने की कार्य–शैली को अच्छा बनाने के लिए इनसे एक ही कार्य बार–बार दोहराने को कहें, इससे सीखने में आसानी होती है। इन्हें वे ही कार्य बार–बार दें जिन्हें ये आसानी से कर सकते हैं, इससे भी सीखने और आत्म–विश्वास में वृद्धि होती है।
5. **श्रृंखला में पढ़ाए –** किसी भी पाठ को छोटी–छोटी श्रृंखला में बाँट कर पढ़ाए ऐसा करने से उन्हें याद करने में आसानी होती है।
6. इन बच्चों में आत्म–प्रतिष्ठा की भावना बनाएं। उनमें आत्म–विश्वास उत्पन्न करें।
7. **निरीक्षण –** इस बात का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए कि जो कार्य उन्हें दिया गया है वह उन्होंने पूरा कर लिया है और कार्य में कितनी प्रगति हो रही है।
8. **छोटे समूहों मे शिक्षा –** इन बच्चों को छोटे–छोटे समूह में बाँट लेना चाहिए,

जिससे कि विशेष शिक्षक का ध्यान प्रत्येक बच्चे पर जाए और शिक्षक द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षण का लाभ सभी बच्चों को पहुँचे ऐसा करने से शिक्षक प्रत्येक बच्चों के साथ जुड़ सकता है, उनमें होने वाले विकास एवं परिवर्तन को समझ सकता है। ऐसा करने से सभी बच्चों को लाभ पहुँचेगा।

मंद–बुद्धि बच्चों में कला द्वारा शिक्षा

1. इन बच्चों को भिन्न–भिन्न प्रकार के रंगों की जानकारी देना। प्रकृति में देखी जाने वाली चीजों की जानकारी देना एवं प्रकृति में फैले हुए अलग–अलग रंगों के बारे में बताना, यह उनके लिए रोमांचक जानकारी होगी।
2. **आकार की समझ –** कला के माध्यम से इन बच्चों में आकारों का ज्ञान देना सरल हो जाता है। जैसे– सूरज या चन्द्रमा गोल है। पहाड़ त्रिकोण में दर्शाते हुए अलग–अलग चीज़ों को दर्शाते हुए उनके आकारों इत्यादि के बारे में जानकारी देना।
3. **चित्रों के माध्यम से पढ़ाना –** कक्षा मे पढ़ाते समय चित्रों की सहायता लेने से बच्चे जल्दी समझ सकते हैं या उन्हें पहचान करना सरल हो जाता है।

4. **कार्य को रचनात्मक –** कला किसी भी कार्य को रोमांचक बनाती है, बच्चे दिये गए कार्य में रूचि लेते हैं, इससे उनके द्वारा किये गए कार्यों में रचनात्मकता देखी जा सकती है।
5. **मानसिकता का विकास –** कला की शिक्षा देने से उनके कार्य रचनात्मक होने लगते है, धीरे–धीरे बच्चो में मानसिकता का विकास भी होने लगता है।

सन्दर्भ

1. Biswas, M. Mentally Retarded and Normal Children N. Delhi, Sterling Publication, 1980.
2. MC. Dowell, R.L. Adamson, G.W. and Wood, F.H. Teaching Emotionally Disturbed Children Boston, Little Brown, 1982.
3. M.S. Ansari, Special Education, International Publishing House, Meerut, 2008.
4. विशिष्ट बालक, आभा रानी बिष्ट, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।